Bihar Board Class 12th Hindi Book Notes Chapter 10 जूठन

जूठन लेखक परिचय ओमप्रकाश वाल्मीकि (1950)

'जीवन-परिचय-
हिन्दी में दलित आन्दोलन से जुड़े महत्त्वपूर्ण रचनाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म 30 जून, सन् 1950 को बरला, मुजफ्फरनगर, उत्तरप्रदेश में हुआ। इनकी माता का नाम मकुंदी देवी और पिता का नाम छोटनलाल था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मास्टर सेवक राम मसीही के बिना कमरे तथा टाट-चटाई वाले स्कूल से प्राप्त की। इन्होंने ग्यारहवीं की परीक्षा बरला इंटर कॉलेज, बरला से उत्तीर्ण की लेकिन बारहवीं की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गए। इस कारण बरला कॉलेज छोड़कर डी.ए.वी. इंटर कॉलेज, देहरादून में दाखिला लिया। इसके बाद कई वर्षों तक इनकी पढ़ाई बाधित भी रही।

इन्होंने सन् 1922 में हेमवंती नंदन बहुगुणा, गढ़वाल, श्रीनगर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया। अपनी पढ़ाई के दौरान ही इन्होंने आर्डिनेंस फैक्ट्री, देहरादून में अप्रैटिस की नौकरी की। इसके बाद ऑर्डिनेंस फैक्ट्री, चाँदा (चन्द्रपुर, महाराष्ट्र) में ड्राफ्टमैन की नौकरी की। ये भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के उत्पादन विभाग के अधीन ऑडिनेंस फैक्ट्री की ऑप्टो-इलेक्ट्रॉनिक्स फैक्टरी, देहरादून में अधिकारी के रूप में भी कार्यरत हैं।

इन्हें अपने उल्लेखनीय कार्यों के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें से प्रमुख हैं-डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार (19923), परिवेश सम्मान (1995), जयश्री सम्मान (1996), कथाक्रम सम्मान (2000)। इन्होंने महाराष्ट्र में 'मेघदूत' नामक नाट्य संस्था स्थापित की और इस संस्था के माध्यम से अनेक नाटकों में अभिनय के साथ-साथ मंच-निर्देशन भी किया।

रचनाएँ-ओमप्रकाश वाल्मीकि की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं
आत्मकथा-जूठन।
कहानी संग्रह-सलाम, घुसपैठिए।
कविता संकलन-सदियों का संताप, बस्स ! हो चुका, अब और नहीं।
आलोचना-दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र।
साहित्यिक विशेषताएँ-ओमप्रकाश वाल्मीकि हिन्दी में दलित आंदोलन से जुड़े महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं। इनके साहित्य में आक्रोश तथा प्रतिक्रिया के अलावा न्याय, समता तथा मानवीयता पर टिकी एक नई पूर्णता, सामाजिक चेतना एवं संस्कृतिबोध भी है। ये केवल किन्हीं निश्चित विचारधाराओं के अधीन होकर नहीं लिखते हैं, अपितु इनके लेखन में स्वयं के जीवनानुभवों की सच्चाई और यथार्थ बोध की अभिव्यक्ति है। दलित जीवन के रोष तथा आक्रोश को ये नवीन रूप में प्रस्तुत करते हैं। इनके साहित्य में मानवीयता की सहज अभिव्यक्ति है।

जूठन पाठ के सारांश

ओमप्रकाश वाल्कीकि जब बालक थे उनके स्कूल में हेडमास्टर कालीराम उनसे पढ़ने के बदले झाड़ू दिलवाते हैं। नाम भी इस तरह से हेडमास्टर पूछता था कि कोई बाघ गरज रहा हो। लेखक से सारा दिन झाड़ू दिलवाता है। दो दिन तक दिलवाने के बाद तीसरे दिन उसके पिता देखे लेते हैं। लड़का फफक कर रो उठता है और पिता से सारी बात बताते हैं। पिताजी मास्टर पर गुस्साते हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि बताते हैं कि उनकी माँ मेहनत-मजदूरी के साथ आठ-दस तगाओं के घर में साफ-सफाई करती थी और माँ के इस काम में उनकी बड़ी बहन, बड़ी भाभी तथा जसबीर और जेनेसर दोनों भाई माँ का हाथ बँटाते थे। बड़ा भाई सुखवीर तगाओं के यहाँ वार्षिक नौकर की तरह काम करता था। इन सब कामों के बदले मिलता था दो जानवर, पीछे फसल तैयार होने के समय पाँच सेर अनाज और दोपहर के समय एक बची-खुची रोटी जो रोटी खासतौर पर चूहड़ों को देने के लिए आटे-भूसी मिलाकर बनाई जाती थी। कभी-कभी जूठन भी भंगन की कटोरे में डाल दी जाती थी। दिन-रात मर-खप कर भी हमारे पसीने की कीमत मात्र जूठन फिर भी किसी को कोई शिकायत नहीं, कोई शर्मिंदगी नहीं, पश्चाताप नहीं। यह कितना क्रूर समाज है जिसमें श्रम का मोल नहीं बल्कि निर्धनता को बरकरार रखने का एक षड्यंत्र ही था सब।

ओमप्रकाश के घर की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि एक-एक पैसे के लिए प्रत्येक परिवार के सदस्य को खटना पड़ता था। यहाँ तक कि लेखक को भी मरे हुए पशुओं के खाल उतारने जाना पड़ता था। यह समाज की वर्ण-व्यवस्था एवं मनुष्य के द्वारा मनुष्य का किया गया शोषण का ही परिणाम है कि एक ओर व्यक्ति के पास धन की कोई कमी नहीं तो दूसरी ओर हजारों-हजार को दो जून की रोटी के लिए निकृष्ट कार्य करने पड़ते हैं। भोजन की कमी और मन की लालसा को पूरी करने के लिए जूठन भी चाटनी पड़ती है। लेखक को एक बात का बहुत गहरा असर होता है उसकी भाभी द्वारा कहा गया कथन कि "इनसे ये न कराओ..... भूखे रह लेंगे इन्हें इस गंदगी में न घसीटो।

"ये शब्द लेखक को उस गंदगी से बाहर निकाल लाते भाभी के कहे ये शब्द आज भी लेखक के हृदय में रोशनी बन कर चमकते हैं। क्योंकि उस दिन लेखक, उनकी भाभी और माँ के साथ सम्पूर्ण परिवार पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ संकल्प से पढ़ाई में ध्यान लगाता है और हिन्दी में स्नातकोत्तर करने के पश्चात् अनेक सम्मान जैसे डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार, परिवेश सम्मान, जयश्री सम्मान, कथाक्रम सम्मान से विभूषित होकर सरकार के आर्डिनेंस फैक्ट्री में अधिकारी पद को भी विभूषित किया। इसके साथ ही, इन्होंने आत्मकथा, कहानी संग्रह, कविता संग्रह, आलोचना आदि पर अनेक रचनाएँ भी लिखीं। महाराष्ट्र में मेघदूत नामक नाट्य संस्था स्थापित कर उसके माध्यम से इन्होंने अनेक अभिनय और मंचन का निर्देशन भी किया।

इस प्रकार लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि ने एक चूहड़ (दलित) के घर में जन्म लेकर जीवन में सफलता के उच्च सोपान तक पहुँच कर यह सिद्ध कर दिया कि जहाँ चाह है, वहाँ राह है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की इस आत्मकथा ने अनेकानेक पाठकों पर भारी असर डाला है 'क्योंकि इनके लेखन में इनके अपने जीवनानुभवों की सच्चाई और वास्तव बोध से उपजी नवीन रचना संस्कृति की अभिव्यक्ति का एहसास होता है। दलित जीवन के रोष और आक्रोश को वे अपने संवेदनात्मक रचनानुभवों की भट्ठी में गला कर एक नये अनुभवजन्य स्वरूप में रखते हैं जो मानवीय जीवन में परिवर्तन करने की क्षमता रखता है। गाढ़ी संवेदना और मर्मस्पर्शिता के कारण उपर्युक्त आत्मकथा पढ़ने पर मन पर गहरा प्रभावकारी असर होता है।

https://www.evidyarthi.in/